MP Board Class 7th Notes Sanskrit Chapter 14 लोकमान्यतिलकः

लोकमान्यतिलकः हिन्दी अनुवाद

लोकमान्यबालगङ्गाधरतिलकः महान देशभक्तः आसीत्।
महाराष्ट्रप्रान्ते रत्नगिरिमण्डले जुलाईमासस्य
त्रयोविंशतितमे दिनाङ्के, १८५६ ख्रिस्ताब्दे तस्य जन्म
अभवत्। तस्य जनकः गङ्गाधरः कुशलशिक्षकः लेखकः च
आसीत्।

तिलकः गणितस्य, संस्कृतभाषायाः, विधिशास्त्रस्य च
प्रकाण्डपण्डितः आसीत्। सः छात्रजीवने एव निश्चयम् अकरोत् यत् "अहं शासकीयसेवां न करिष्यामि।" आजीवनं भारतस्य स्वतन्त्रतायाः कृते सङ्घर्षं करिष्यामि च इति। – सः अघोषयत्, 'स्वराज्यं मम जन्मसिद्धः अधिकारः अस्ति।'

अनुवाद :
लोकमान्य बालगंगाधर तिलक महान देशभक्त थे। महाराष्ट्र प्रान्त के रत्नगिरि मण्डल में जुलाई के महीने की तेईसवीं तारीख को सन् १८५६ में उनका जन्म हुआ। उनके पिता गंगाधर एक कुशल शिक्षक और लेखक थे।

तिलक गणित के, संस्कृत भाषा के तथा विधिशास्त्र (कानून) के प्रकाण्ड पण्डित थे। उन्होंने छात्रजीवन में ही निश्चय कर लिया था कि "मैं शासकीय सेवा नहीं करूँगा।" और जीवनपर्यन्त भारत की आजादी के लिए संघर्ष करूँगा।

उन्होंने घोषणा की "स्वराज्य मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है।"

तिलकः राष्ट्रसेवायाः कृते संलग्नः अभवत्। जनजागरणस्य कृते सः शिवराजोत्सवस्य गणेशोत्सवस्य च प्रारम्भम् अकरोत्। सः केसरी-मराठेति समाचारपत्रयोः सम्पादनं च अकोरत्। तिलकमहोदयस्य प्रभावेण देशे स्वतन्त्रायै नवचेतना सञ्जाता। सः लोकमान्यः इति उपाधिना विभूषितः। तस्य प्रभावम् असहमानाः आंग्लाः तस्योपरि राजद्रोहस्य मिथ्याभियोगं न्यायालये प्रस्तुतवन्तः। न्यायाधीशेन सः षट्वर्षभोग्येन कारावासेन दण्डितः। सः निर्भयम् अवदत्, "अस्मात् न्यायालयात् परमेश्वरस्य न्यायालयः उच्चतरः अस्ति। तस्मिन् अहं निर्दोषः अस्मि।" कारागारे सः 'गीतारहस्य' नामक ग्रन्थम् अरचयत्।

अनुवाद :
तिलक राष्ट्रसेवा के लिए संलग्न हो गये। जनजागरण के
लिए उन्होंने शिवराजोत्सव को और गणेशोत्सव को प्रारम्भ
किया। उन्होंने केसरी और मराठा नामक दो समाचार पत्रों का सम्पादन किया। तिलक महोदय के प्रभाव से देश में स्वतन्त्रता के लिए नवचेतना उत्पन्न हो गयी। उन्हें लोकमान्य की उपाधि से विभूषित किया। उनके प्रभाव को सहन न करते हुए अंग्रेजों ने उनके ऊपर राजद्रोह का झूठा अभियोग न्यायालय में प्रस्तुत किया। न्यायाधीश ने उन्हें

छः वर्ष तक के कारावास भोगने से दण्डित किया। उन्होंने निर्भय होकर कहा-“इस न्यायालय से परमात्मा का न्यायालय अपेक्षाकृत ऊँचा है। उसमें मैं निर्दोष हूँ।” कारागार में ही उन्होंने ‘गीता रहस्य’ नामक ग्रन्थ की रचना की।

सः महान् कर्मयोगी आसीत्। सः अकथयत् “उद्यमहीनस्य सहायतां परमात्मा अपि न करोति। कर्मशीलस्य सहायतां प्रभुः करोति।”

अगस्तमासस्य प्रथमदिनाङ्के १९२० तमे वर्षे सः दिवंगतः। सत्यम्! बालगङ्गाधरतिलकमहोदयः अस्माकं देशस्य गौरवम्।

केनापि सुष्ठुउक्तम्, “तिलकः” भारतभालस्य तिलकम्’ इव भाति।

अनुवाद :
वे महान कर्मयोगी थे। उन्होंने कहा था-“उद्यमहीन की (आलसी की) सहायता परमात्मा भी नहीं करता है। कर्मशील (व्यक्ति) की सहायता प्रभु करते हैं।”

अगस्त महीने की पहली तारीख को सन् १९२० ई. में उनका स्वर्गवास हो गया। सत्य है! बालगंगाधर तिलक महोदय हमारे देश के गौरव थे।

किसी ने ठीक ही कहा है “तिलक” भारतवर्ष के मस्तक के तिलक की भाँति शोभा पाते हैं।

लोकमान्यतिलकः शब्दार्थाः

जनकः = पिता। कृते = लिए। असहमाना=सहन न करने वाले। आंग्लाः = अंग्रेज। तस्योपरि = उनके ऊपर। मिथ्या = झूठा। प्रस्तुतवन्तः = प्रस्तुत किया। निर्दोषः = दोषरहित। अरचयत् = रचना की। दिवङ्गतः = मृत्यु हो गई।

https://www.evidyarthi.in/